भारतीय वस्त्र विकास की यात्रा और उसकी चुनौतियाँ

डॉ. वीणा कुमारी

सारांश

वस्त्र देश-विदेश की सीमाओं से परे प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत है, जिसका सीधा संबंध हमारे रोज़मर्रा की कार्यशैली से है। यही एक वजह है, जो हमें प्रतिदिन कुछ नया व सहज करने की प्रेरणा देती है। इसी नएपन के बीच अपने मूल स्वरूप को बचाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य भी है।

शुरू में वस्त्र तन ढकने की वस्तु के रूप में अविष्कृत हुए पर कालांतर में वस्त्र और परिधान में आए परिवर्तनों से प्रभावित होकर अनसिले और सिले वस्त्रों, कढ़ाई किए गए अलंकृत वस्त्रों में बदलते रहे। बावजूद इसके, कुछ मायनों में, विशेषकर नारी, वस्त्र के क्षेत्र में आज भी स्त्रियाँ साड़ी या सलवार सूट में ही सजना पसंद करती है। साड़ियों की तुलना में विदेशी नारियों के वस्त्र सपाट लगते हैं। साड़ी के द्वारा भले ही खुले अंगों का कामुक प्रदर्शन नहीं होते हैं, पर यह नारी शरीर के सौंदर्य में अपनी कलात्मकता के चलते और चार चाँद लगा देती है। यह भारतीय संस्कृति की मर्यादा को भी दर्शाती है। (वीणा ए 2004)

सामान्यतः वस्त्र और परिधान ये दोनों शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, परंतु ऐसा है नहीं। वस्त्र वह कच्चा माल है, जिससे कोई परिधान आकार लेता है। वस्त्र को काँट-छाँट और अलंकृत कर जब किसी शरीर विशेष के अनुकूल तैयार किया जाता है, तब वह परिधान बनता है। वस्त्र से परिधान तक की यात्रा वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में आता है, जिसके कई पड़ाव है। वस्त्र एवं परिधान, मौसम, परिस्थितियाँ, शारीरिक आवश्यकताओं, पद-प्रतिष्ठा, ऐतिहासिक कारक और सामाजिक हैसियत से सदा प्रभावित होते रहे हैं।

मुख्य शब्द

साड़ी

विकास

यात्रा

चुनौतियाँ

परिचय

भारतीय संस्कृति एक सामाजिक संस्कृति है, जो एक मिश्रित संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है। (दिनकर) जिसका प्रभाव भारतीय वस्त्र उद्योग के विकास पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वस्त्र को प्रभावित करने के कई कारणों में से भौगोलिक कारण एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि ठंडे, गरम, समशीतोष्ण प्रदेशों के जरूरत अलग-अलग होती है, सो आवश्यकता पूर्ति वस्त्र विकास का एक अभिन्न अंग बन गया। अब भारत को ही ले लेते हैं। भारत एक गर्म देश है, जहाँ साल भर कमोवेश या अधिकांश जगहों पर गर्मी पड़ती है, अतः यहाँ के वस्त्रों को हवादार ओर हल्का होना बुनियादी शर्त है।

समीक्षा

हम जब भी कुछ नया करने की कोशिश करते हैं, तो उसमें मूल स्वरूप को बचाए रखने की बड़ी चुनौती होती है। चाहे वह खाने-पीने का सामान हो या कार्य सरलीकरण के उपकरण या वस्त्र का स्वरूप आज हम डिजिटल जमाने की बात करते हैं, बल्कि यों कहें कि उस ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। आज हम एक क्लिक पर सारे समाधान ढूंढ लेने की बात करते हैं, तो दूसरी ओर क्रियात्मकता, रचनात्मकता, संवेगात्मक भावनाओं में ह्रास होने की बात भी करते हैं।

भारतीय वस्त्र विकास की बहुत ही लंबी यात्रा है। प्रारंभ में नग्नता मजबूरी व अज्ञानता थी, परंतु आज

यह ओढ़ी हुई मजबुरी है यह आधुनिकता का परिचायक बन गया है। जैसे-जैसे व्यक्ति का विकास होता गया वस्त्र भी उसमें अपनी जगह बनाता गया। पेड़ के पत्ते, छाल, जानवरों के खाल से तन ढकने की प्रक्रिया से शुरू होकर सूत, धागा, हस्तकरघा, पावरलूम, मशीन से होते हुए डिजिटल की यात्रा तक तय की है। तो स्वाभाविक है कि विकास की इस यात्रा को भिन्न-भिन्न तत्व (जलवायु, धर्म, आर्थिक, सामाजिक परिवेश, राजनीतिक परिवर्तन) प्रभावित भी किया ही होगा। विकास के उतार-चढ़ाव का सीधा प्रभाव वस्त्र विज्ञान पर पड़ा ही होगा, क्योंकि वस्त्र का प्रयोग व्यक्तियों द्वारा ही की जाती है और भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का विचारधारा भिन्न-भिन्न होती है।

प्राचीन काल (ई. पू. - 200-250 से आरंभिक पाँचवी शताब्दी तक)(ROSHEN)में वस्त्र विकास की गति धीमी होने के प्रमाण मिलते हैं। इस समय वस्त्रों की संख्या कम थी। पुरुषों और स्त्रियों मुख्यतः तीन प्रकार के वस्त्र धारण करते थे अंतरीय, उत्तरीय और कायबंध चूँकि उस वक्त अधिकांश वस्त्र अनसिले होते थे। वस्त्रों को बाँधने और कसने के लिए कायबंध का प्रयोग किया जाता है। अंतरीय कमर से नीचे कायाबंध या कलाबुका के द्वारा कसा जाता था, जिस पर कढ़ाई किया हुआ होता है। उत्तरीय कमर के उपर का भाग ढकता था। उत्तरीय पहनने की कई शैलियाँ थी जो कालांतर में साड़ी पहनने की भिन्न-भिन्न शैलियों के रूप में विकसिल हुई। यह भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग था। अतः इस समय के वस्त्र और परिधान भव्य हुआ करते थे। मध्यकालीन भारत में जब मुगलों का शासनकाल आया तो उनकी एक ही जन्म मिला है इसे अच्छी तरह जी लेने की मानसिकता ने विलासी प्रवृति को जन्म दिया, जिसका प्रभाव खान-पान से लेकर वस्त्र विकास पर पड़ा फलस्वरूप इस काल में वस्त्र विकास चरमोत्कर्ष पर रहा इस काल के वस्त्र में सोने चाँदी की कढ़ाई, कलात्मक कलाकृतियाँ वस्त्रों की भव्यता की बात ही कुछ और थी, परंतु इस काल के वस्त्र भव्य तो हुए पर ढीले-ढाले और आरामदायकता पर ही विशेष ध्यान रखा गया। इस पर सामाजिक प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। सम्पन्न वर्ग के लोगों का वस्त्र कीमती होते यहाँ तक कि एक-एक वस्त्र को कई श्रमिक कई महीने में तैयार करते बावजूद इसके उसे विलासी राजाओं उचित मूल्य देकर सहज ही खरीद लेते जिससे निर्माणकर्ताओं का उत्साह निर्माण में बना रहता था। साधारण और निम्न वर्ग के लोगों के वस्त्र हल्के होते। इस काल में वस्त्र उत्पादन का इतना विकास हो चुका था कि भारत वस्त्रों का यूरोपीय देशों में निर्यात करने लगा। इसी काल में मौसम के अनुकूल वस्त्र (गर्मी में रेशमी, सूती और जाड़े में ऊनी शाल व रूमाल) का भी विकास हुआ। इस समय बनारस की बनारसी साड़ी काफी लोकप्रिय थी। उस पर सोने-चाँदी की कढ़ाई की जाती, जिससे वस्त्र सुंदर के साथ भारी भी हो जाती थी। इसे रोजमर्रा की जीवन शैली में न शामिल करके विशेष तरीके से विशेष आयोजनों के लिए बनाए जाते, जिसका आज के परिपेक्ष्य में भी वही लोकप्रियता है। विशेषकर शादी के शुभ अवसर पर भारतीय स्त्रियाँ आज भी बनारसी, चंदेरी, काजीवरम, पटोला जैसे साड़ियाँ का ही चयन करती है। साड़ी महज एक परिधान नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीयता को अपने आप में समेटे हुए संपूर्णता का एहसास दिलाती है।

सोशल लाइफ ऑफ द मुगल इम्परर्स, द कस्टूयम एण्ड टेक्सटाइल ऑफ इण्डिया, शोध ग्रंथ उत्तर भारत के वस्त्र एवं परिधान, इन पुस्तकों के अध्ययन से मुगल काल भारतीय वस्त्र विकास की दृष्टि से चरमोत्कर्ष पर थी यह पता चलता है। यह काल भारतीय संस्कृति के अनुरूप विकसित हुई। यहाँ का बाजार व्यवस्था भी सुदृढ़ होने के प्रमाण मिलते हैं।

यहाँ की जलवायु विशेष कर उत्तर भारत की मिट्टी कपास उत्पादन की दृष्टि से बहुत ही उर्वरा थी, इसलिए भारतीय किसान उत्साहपूर्वक कपास की खेती करते थे। उससे सूत्री वस्त्र निर्माण होता जो भारत जैसे गर्म देश के लिए न केवल अनुकूल था, बल्कि आरमदायक और हवादार भी थे।

इसके अलावा भारत में ही कुछ ठंडे प्रदेश भी है जहाँ ठंड अधिक पड़ने से वहाँ के आवश्यकता पूर्ति हेतू गर्म रेशे व वस्त्र का विकास होता रहा, जिसके कई बेराइटियाँ है। जैसे- अँगूरा, अल्पाका, पाश्मिना, मिककोट, वर्जिन, टेगलोक (वस्त्र, विज्ञान एवं

परिधान)।

जब ब्रिटिश शासन काल का प्रार्दूभाव (आगमन) भारत में हुआ तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव वस्त्र विकास पर इस तरह पड़ा कि इसमें आमूल-चूल परिवर्तन हो गए। परिणाम यह हुआ कि जहाँ भारत सूती रेशमी व ऊनी वस्त्रों के लिए ही जानी जाती थी। वहाँ कई तरह की रासायनिक रेशों का प्रयोग होने लगा वस्त्र शारीराकारिक होने लगे वे लोग Dress Conscience होते थे। उनकी वैज्ञानिक सोच ने वस्त्र निर्माण कला को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर उसमें काफी परिवर्तन ला दिया जिससे Dress Sense के साथ -साथ Dress Material का भी विकास हुआ, जिसका भारतीय बाजार पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ा। उनके कुटनीति के आगे भारतीय बाजारों को घुटने टेकने पड़े। हमारे ही यहाँ से कच्चा माल खरीदते उसे परिष्कृत कर हमारे ही बाजार में बेच देते। ये सच है कि ब्रिटिश काल में ही भारत में रेडीमेट वस्त्रों की शुरूआत हुई, साथ ही कपड़ो को पहनने ओढ़ने के अलावा कई भिन्न-भिन्न प्रयोग के (पर्दे, कुशन, वाटरप्रूफ, एयरप्रूफ, फायरप्रूफ) लिए प्रयुक्त होने लगे जिसका क्रमशः विकास होता रहा आज परिणाम यह है कि कई विदेशी कम्पनियाँ (V2, वालमार्ट, बिग बाजार, फ्लिपकार्ट) बड़ी ही सरलता से यहाँ पैर जमा चुकी है जिसकी भौतिकता की इस दौड़ में जरूरत भी है।

Textiles : Fibre to Fabric पौटर कर्बमैन (Corbman) ने कुछ विद्वानों एवं प्रकाशनों के प्रति आभार प्रकट किया है जिससे पाश्चात्य देशों के अधिकारी विद्वानों का इस विषय में गहरी रूची रखने का प्रमाण मिलता है। उसकी तुलना में भारत में बहुत कम काम हुए, विशेषकर हिंदी में।

उपसंहार

लेखिका ने 'भारतीय वस्त्र परिधान के उद्भव एवं विकास का एक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया है और यह जानने की कोशिश की है कि भारतीय वेश-भूषा में कौन से तत्व हैं, जो अपरिवर्तनशील है। विभिन्न कालखंडों के सामाजिक इतिहास के अध्ययन से लेखिका इस नतीजे पर पहूँची कि तब से लेकर अब तक भारतीय नारी का साड़ी के प्रति लगाव परिवर्तनशीलता के बीच नैर्यन्तर्य को रेखांकित करता है। एक वस्त्र का मोहनजोदड़ो की सभ्यता से लेकर आज तक वैसे ही बना रहना अपने-आप में एक अद्भूत घटना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Alkazi Roshen : Ancient Indian Costume

2. प्रमिला वर्मा: वस्त्र विज्ञान एवं परिधान सप्तम संस्करण। P III

3. रामधारी सिंह दिनकरः संस्कृति के चार अध्याय

4. कार्बमैन पौटर : Textiles : Fibre to Fabric

5. वृजभूषण जमीला : द कस्टूयम एण्ड टेक्सटाइल ऑफ इंडिया

6. Ansari M.A. : सोशल लाइफ ऑफ द मुगल इम्पर्रस 1526-1707

7. डॉ. रामसवारी: शोध ग्रंथ मुगल कालीन उत्तर भारत के वस्त्र एवं परिधान 1526- 1764

8. डॉ. वीणा कुमारी: भारतीय वस्त्रों परिधानों के उद्भव एवं विकास का एक समीक्षात्मक अध्ययन